लौहित्य साहित्य सेतु : सहयोगी विद्वानों द्वारा पुनरीक्षित अर्धवार्षिक द्विभाषिक ई-पत्रिका
वर्ष: 1, संख्या: 1; जुलाई-दिसंबर 2020

अजाब

मूल- सुल्तान जमील नसीम (पाकिस्तान)
अनुवाद- आशा प्रभात

इलाके पर कब्जा करने के बाद चूहों ने पहला काम यह किया कि चुन-चुन कर सक्रिय लोगों के कान कुतर लिए और उन कान कटे सरदारों ने उस ऐब को वफादारी जाना। सम्मान समझा और बिना चूँ चपड़ किये वे सभी आदेशों का पालन करने लगे। वह सारे काम करने लगे जो सिर्फ चूहों के कायदे से सम्बंधित थे । चूनांचे पहला आदेश मिला कि जितनी कलम हैं सभी तोड़ दी जाए और सारे कागज जला दिये जायें। इस आदेश का भी पालन किया गया। इसके बाद भी चूहे आज्ञाकारी हो जाने वालों की ओर से संतुष्ट नहीं थे । क्योंकि उन्हें भय से विचलित कर देने वाली यह सूचना मिल चुकी थी कि अभी इलाके का एक ऐसा शख्स छिपा हुआ है जो उनके बारे में एक-एक खबर लिख रहा है। चूंकि वे आदमी से अधिक शब्दों से डरते थे। उन्हें मालूम था कि आदमी तो मर जाता है और बिक भी जाता लेकिन शब्द जिंदा रहते हैं। इसलिए चूहों ने उस आदमी की तलाश में कोना-कोना छान मारा। मगर उस शख्स का कहीं पता नहीं चला।

चूहों को यकीन था कि वह आदमी यही कहीं छिपा हुआ है और इसी यकीन ने उनकी रातों की नींद और दिन का चैन हराम कर दिया था। वे दिन-रात इसी खोज में रहते कि कहीं से उसका ठिकाना मालूम हो तो वे उसको ठिकाने लगायें। मगर उसको तो जैसे जमीन निगल गयी या आसमान खा गया था। उसकी ठौर मिल ही नहीं रही थी।

चूहे लिखे हुए शब्दों से डरते थे । इसलिए उन्हें यह इतमीनान तो था कि वह आदमी कहीं न कहीं, कभी न कभी मिल ही जायेगा। लेकिन अगर उसके लिखे हुए शब्द नहीं मिले तो बहुत बुरा होगा। वे चाहते थे कि इस आबादी में उनके आने की खबर ऐसे शब्दों में न लिखे जाए जिनसे भविष्य में उनकी पीढ़ी को शर्मिंदगी और परेशानी हो । आबादी पर कब्जा करने से पहले उन्होंने इंसानी आदतों और खासियतों को भली भाँति समझ लिया था और दूसरे इलाकों की तरह इस आबादी के बारे में भी बरसों खोज की थी । उन्हें कोई डर था तो मात्र उस आदमी से । इसलिए पहला प्रयास तो

यही किया गया कि कब्जा से पहले ही उस आदमी को पकड़ लिया जाए । लेकिन यह काम आसान नजर नहीं आया। इसलिए उन्होंने सोचा कि कब्जा करने के बाद शायद यह मुमकिन हो । इस नतीजे पर तो वे पहुँच गए थे कि यह इंसान जमीन पर उसी कारण से फसाद फैलाता है जब उसमें हबस पैदा होती है या विषय वासना बेकाबू करती है । अगर सरदारों को उनके इलाकों की सरदारी और दौलत की लालच दी जायेगी तो उस इलाके में अपने ही भाइयों का गला काटने पर आमादा हो जायेंगे ...और यही हुआ भी । आबादी पर कब्जा करने के बाद कान कटे सरदारों को अधिक से अधिक अधिकार दे दिए । बस वह आदमी नहीं मिला जिसकी उनको तलाश थी। वे यह बात भी जानते थे कि ऊँची आवाज से कही जानेवाली बातें, नारें और भाषण इंसान पर उतनी प्रभावी नहीं होते जितनी यह कानाफूसी से प्रभावित है। सरगोशियाँ उसकी भावनाओं को उत्तेजित कर देती है । अफवाहों पर वह खूब ध्यान देता है और शायद इसीलिए कानों का कच्चा माना जाता है और सबसे ज्यादा लिखे की गवाही पर ईमान रखता है । अपने सजातियों की खूबी पर ध्यान नहीं देता, खामी गौर से सुनता है । तो यदि इस आदमी ने ऐसी लेख छोड़ दी जो चूहों के विरुद्ध हुई तो आनेवाली इंसान की नस्लें गलतफहमी में पड़कर उनके खिलाफ उठ खड़ी होगी। चूहें आनेवाले समय के लिए अपनी पीढ़ी के लिए खुशहाली, अमन के लिए शांति कायम करने के अलावा बाकी दुनिया के लिए अपनी इंसाफपसंदी, प्रजापालक, हितैषी, हिकमत व बुद्धिमत्ता की परम्परा भी छोड़ना चाहते थे।

वह गुमशुदा आदमी भगवान जाने क्या लिख रहा होगा और क्या लिखा हुआ छोड़ जायेगा यह ? यह खयाल काँटे की भाँति हर समय उनके दिलोदिमाग में खटकता रहता था। चूहों ने यह बात अच्छी तरह जान ली थी जबानी गलतफहमियों के धारे का रूख मोड़ना आसान है। लेकिन लिखित के अंदर से उठनेवाले तूफान के आगे प्रवचनों के बांध बांधना निहायत मुश्किल काम है। इसलिए शब्दों का डर उन्हें उस आदमी की खोज में हलकान किए हुए था।

जब कोई सुराग नहीं मिला तो अति बुद्धिमान चूहे सर जोड़ कर बैठे और यह निर्णय कर उठे कि खाने पीने के सामानों पर कंट्रोल करना आवश्यक है । हर आदमी को इतना ही खाने को मिले मुश्किल से पेट भर सके । इस तरह गुमशुदा आदमी के पास खाने पीने की चीजें पहुँचने का खतरा नहीं रहेगा और उसके बाद संभव है भूख प्यास से निढाल होकर स्वयं ही अपने छिपने के स्थान से निकल आए वरना उसके लिखने की गति कमसे कम कमजोड़ हो ही जायेगी। सयाने चूहों के इस सुझाव को इलाके का विधान बना दिया गया और इस विधान पर सख्ती से अमल होने लगा । जब इलाके के लोगों को भरपेट खाने पर भी आफत आने लगी तो वे अपने कान कटे सरदारों से फरियाद

किया। वे सरदार चूहों के पास गए और गिड़गिड़ाने लगे - "एक आदमी की सजा सभी को क्यों मिल रही है हुजूर । हमने तो आपके खिलाफ एक शब्द नहीं लिखा और न ही बोला है। और न ही सुन रहे हैं। हम तो यह संकल्प लिये बैठे हैं कि जहाँ भी वह शख्स मिलेगा उसी समय उसे आपको सुपुर्द कर देंगे। फिर हमलोगों को भोजन में कमी आपकी कृपा से क्यों हो रही है ।" सयाने चूहों ने उन्हें ढाँढ़स बँधाया -

"यह आपसे किसने कहा कि सजा के तौर पर भोजन में कमी की गयी है ? आप बुद्धिमान जन है आपको मालूम होगा कि दिन व दिन आबादी में बढ़ोत्तरी हो रही है और जमीन वहीं की वहीं है। हम पैदावार बढ़ाने का प्रयास कर रहे हैं, बस आपलोग भी तनिक जमकर मेहनत करे। थोड़े दिनों की तकलीफ है, यह फौरी व्यवस्था इसलिए की गयी है कि आप में से कोई भूखा नहीं मरे। चाहे कुछ समय आपका सहयोग हमारे साथ रहा तो हम विश्वास दिलाते हैं कि फिर पहले की तरह आप लोगों को खाने पीने के लिए मिलने लगेगा । और हाँ- अपने लोगों से कहिए उस बदमाश आदमी की खोज में थककर न बैठ जाए। हर तरफ नजर रखे। हमें यकीन है कि एक न एक दिन वह मिल कर रहेगा। फिर हम सब जश्न मनायेंगे।

चूहों की बात को लोगों ने अपनी तकदीर का लिखा माना और जैसे गए थे वैसे ही पलट आए। फिर दिन गुजरे। महीने-साल बीते। एक सी स्थिति देखते-देखते शदियों की आँखे पथरा गयीं।

और चूहे इंसान के कद तक पहुँच गए । तब एक मुखबिर ने सूचना दी कि उसे एक ऐसे ठिकाने का पता चला है जहाँ उस गुमशुदा आदमी के होने की उम्मीद है। यह सुनकर चूहे खुशी के मारे और फुल गए। फिर इलाके के लोग चूहों के साथ-साथ उस मुखवीर के पीछे चल पड़े।

बस्ती के बीचोंबीच एक छतनार पेड़ के तने में उस गुमशुदा का ढाँचा मौजूद था और उसके हाथ में कलम थी। उसके करीब बहुत सारे कागज बिखरे पड़े थे। चूहों को कागज पर लिखी हुई शब्दों की लकीरें साँपों की तरह सरसराती महसूस हुई। उन्हें देखते ही पहले तो डर के मारे वे चंद कदम पीछे हट गए । उनके कद घटने लगे और साये इतने बढ़े कि इंसानों के कदम चूमने लगे। जब चूहों के डरे सहमे दिमाग ने ये निर्णय करना चाहा कि उस पेड़ को आग लगा दे ताकि इंसानी ढाँचे के साथ ये सारे शब्द भी जलकर राख हो जायें तब सयाने चूहे फिर आड़े आए और समझाया -

"बेशक इस तरह सबकुछ खतम हो जायेगा मगर यह मत भूलों कि ये जला हुआ पेड़ एक ऐसी निशानी की तौर पर हमेशा के लिए शेष रह जायेगा जो शब्दों से अधिक महत्त्वपूर्ण होगा । अपने-अपने तौर पर लोग अंदाजा लगायेंगे। इस पेड़ के विषय में तरह-तरह की कहानियाँ इस विश्वास के साथ दूसरे

को सुनायेंगे कि यह यथार्थ है । ये अफवाहें हमारे लिए ज्यादा खरतनाक होगी ।"

"फिर हम क्या करें ?"

"देखो, अब कोई लिखनेवाला हाथ बाकी नहीं है जो इन शब्दों में इजाफा कर सके । इजाफे की सारी उम्मीदें समाप्त हो गयी । हमें इन लेखों में से चंद शब्दों की जरूरत है, सारे कागजों को बरबाद कर देने का मतलब यह होगा कि भविष्य हमारे विरुद्ध गवाही में एक गूंगे अतीत को प्रस्तुत करे।"

सरदार चूहे ने सयानों की बात सुनकर और बेबस होकर पूछा-

"यह बताइये हमें अब क्या करना चाहिए ?"

"जो कुछ लिखा है पहले उसे पढ़ो । फिर हम बतायेंगे कि क्या करना है तुम्हें ।"

चूहों ने पढ़ा । बुद्धिमानों के सुझाव से बहुत से लेखों को बीच सुराख खोले गए, दरवाजें बनाये गए और जब चूहों की मंशा के मुताबिक मानी भी हवा आने लगी तो कुतरे हुए शब्दों में से कुछ और इंसानी ढाँचा उस पेड़ से निकाल कर तेज बहते दरिया के हवाले कर दिया। शेष शब्द अपने साबिक बिलों में दबा दिए गए।

इस काम से फारिग होकर उन्होंने अपने इलाके में सारे लोगों को बुलाया और कान कटे सरदारों से कहा कि गुमशुदा आदमी जो लेख छोड़ गया है उसको ऊँचे स्वर में पढ़कर सब लोगों को सुना दो।

सरदार जब वह आलेख पढ़ रहा था तो पेड़ों पर बैठे परिंदे हैरान थे कि आज इंसान को क्या हो गया जो वह खुदा के गुनगान के बजाय चूहों का कसीदा पढ़ रहा है.....।

संपर्क-सूत्र:
कोट बाजार,सीतामढ़ी
ashaprabhat77@gmail.com
8210826546, 9835263251